अनमोल खजाना

(२७-२-२०१३)

धर्मराज बाबा की सजा से, जाते हैं वो छूट
श्रीमत पर पावन बन जिनका, निश्चय हो अटूट

देह अभिमान के कारण, लगती है माया की चमाट
इसिलिए तो बाबा कहते, रखो अपना चार्ट

मददगार हम हैं बाबा के, वर्से के हकदार
दान दिए फिर से ना लेना, माया पांच विकार

शिव की हम औलाद शक्तियां, दुनिया में मशहूर
कम्बाइन्ड हम साथ सदा, उनके नयनों के नूर

पतित पावन परमपिता शिव, निराकार भगवान
पतितों को पावन बनाना, केवल उनका काम

कल्प-कल्प के संगमयुग शिव, आते बन मेहमान
बना के वारिस ले चलने को, अपने संग निर्वाण

पार्वतियां हम अमरनाथ शिव, हमको कथा सुनाते
इक्कीस जन्म की राजाई का, वर्सा हमें दिलाते

जबाब देते पत्रों का, बाबा को कितना काम
अंगुलियां घिस जाती है, पड़ जाते हैं निशान

दान दिया वापिस लिया, हो जायेंगे पदभ्रष्ट

जो भी खजाने जमा किए, सब हो जायेंगे नष्ट

माला के दाने नहीं खाते, धर्मराज की मार
धर्मराज खुद करते उनका, स्वागत और सत्कार

हम शिव के एडॉप्टेड बच्चे, लिया बाप ने गोद
ब्रह्मा द्वारा सत्य ज्ञान का, हमें कराने बोध

अगर करे कोई क्रोध समझलो, आया इसमें भूत
लाल-लाल चेहरा और आँखें, इसका यही सबूत

जब निकलेंगे भूत बनेंगे, फिर तुम रूप बसंत
मुख से ज्ञान का दान, कथायें नहीं करेंगे दंत

सबसे पहला नम्बर भारी, दुश्मन देह अभिमान
साथ-साथ भूतों की सेना, फीलिंग और अपमान

स्वीट होम, प्यारे बाबा और, राजधानी हो याद
अन्त मते सो गते, याद से होंगे हम आबाद

सेवा और स्व उन्नति में, रखो स्वयं को मस्त
आधा कल्प के खातिर माया, होंगी तभी परस्त

पवित्रता का श्रेष्ठ खजाना, वही बड़े धनवान
सुख शान्ति बच्चे बन जाते, होती नहीं थकान

–:ओमशान्ति:-